



Mr. Ansh Soni

30 Aug 2013

07:00 PM

Piparia

Model: Web-MyKundli

Order No: 119987101

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 30/08/2013
दिन _____: शुक्रवार
जन्म समय _____: 19:00:00 घंटे
इष्ट _____: 32:33:49 घटी
स्थान _____: Piparia
राज्य _____: Madhya Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 22:45:00 उत्तर
रेखांश _____: 78:21:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:16:36 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 18:43:24 घंटे
वेलान्तर _____: -00:00:39 घंटे
साम्पातिक काल _____: 17:19:01 घंटे
सूर्योदय _____: 05:58:28 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:35:29 घंटे
दिनमान _____: 12:37:01 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 13:17:12 सिंह
लग्न के अंश _____: 22:21:58 कुम्भ

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कुम्भ - शनि
राशि-स्वामी _____: मिथुन - बुध
नक्षत्र-चरण _____: आर्द्रा - 1
नक्षत्र स्वामी _____: राहु
योग _____: सिद्धि
करण _____: वणिज
गण _____: मनुष्य
योनि _____: श्वान
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मार्जार
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: कू-कुणाल
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कन्या

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1935	भाद्रपद	8
पंजाबी	संवत : 2070	भाद्रपद	15
बंगाली	सन् : 1420	भाद्रपद	13
तमिल	संवत : 2070	आवनी	14
केरल	कोल्लम : 1189	चिंगम	14
नेपाली	संवत : 2070	भाद्रपद	14
चैत्रादि	संवत : 2070	भाद्रपद	कृष्ण 9
कार्तिकादि	संवत : 2070	श्रावण	कृष्ण 9

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 9
तिथि समाप्ति काल _____ : 06:34:29
जन्म तिथि _____ : 10
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : मृगशिरा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 18:29:59 घंटे
जन्म योग _____ : आर्द्रा
सूर्योदय कालीन योग _____ : वज्र
योग समाप्ति काल _____ : 18:37:31 घंटे
जन्म योग _____ : सिद्धि
सूर्योदय कालीन करण _____ : गर
करण समाप्ति काल _____ : 06:34:29 घंटे
जन्म करण _____ : वणिज
भयात _____ : 01:15:01
भभोग _____ : 67:29:54
भोग्य दशा काल _____ : राहु 17 वर्ष 8 मा 0 दि

घात चक्र

मास _____ : आषाढ़
तिथि _____ : 2-7-12
दिन _____ : सोमवार
नक्षत्र _____ : स्वाति
योग _____ : परिघ
करण _____ : कौलव
प्रहर _____ : 3
वर्ग _____ : मूषक
लग्न _____ : कर्क
सूर्य _____ : मीन
चन्द्र _____ : कुम्भ
मंगल _____ : मेष
बुध _____ : मकर
गुरु _____ : वृष
शुक्र _____ : मिथुन
शनि _____ : कुम्भ
राहु _____ : कर्क

Shri Dadaji Jyotish kendra

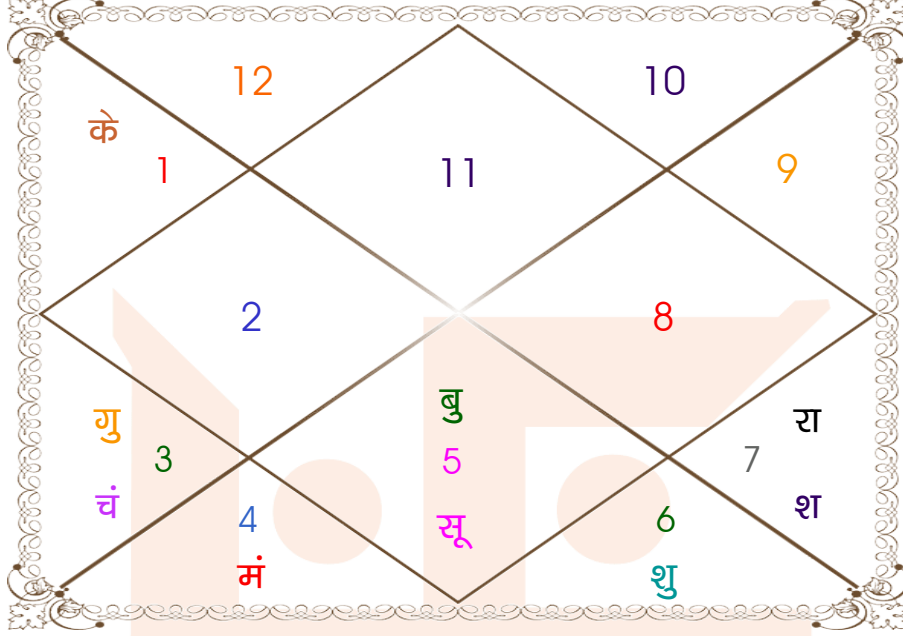
Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

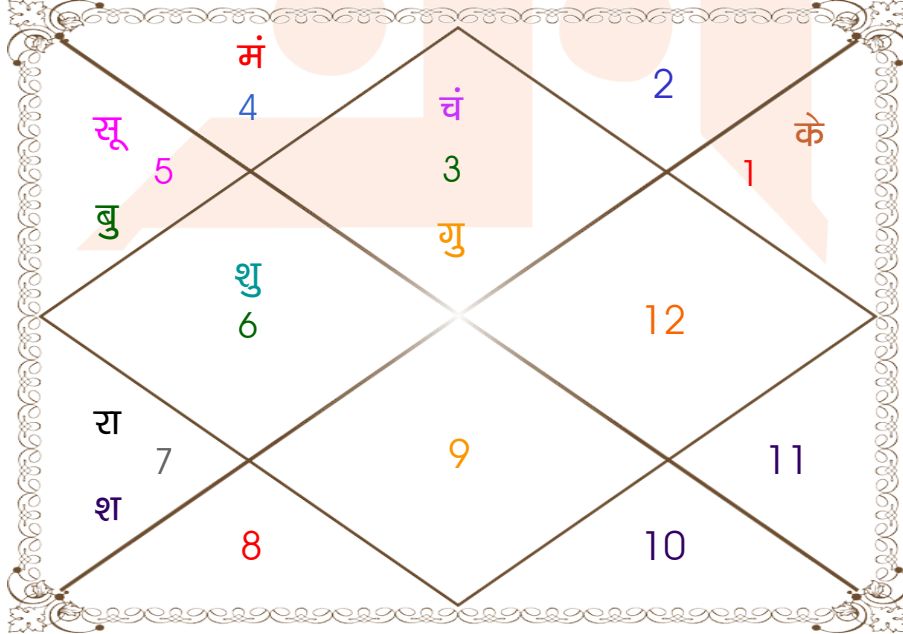
dadajijyotishkendra@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

	के	चं गु
ल		मं
		बु सू
	रा श	शु

लग्न कुण्डली

गु चं	के	ल
मं		
सू बु	श रा	
शु		

विंशोत्तरी

राहु 17वर्ष 8मा 0दि

राहु

30/08/2013

02/05/2133

राहु	01/05/2031
गुरु	01/05/2047
शनि	01/05/2066
बुध	01/05/2083
केतु	01/05/2090
शुक्र	02/05/2110
सूर्य	01/05/2116
चन्द्र	02/05/2126
मंगल	02/05/2133

योगिनी

मंगला 0वर्ष 11मा 23दि

भद्रिका

24/08/2023

23/08/2028

भद्रिका	04/05/2024
उल्का	04/03/2025
सिद्धा	22/02/2026
संकटा	04/04/2027
मंगला	25/05/2027
पिंगला	03/09/2027
धान्या	02/02/2028
भ्रामरी	23/08/2028

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

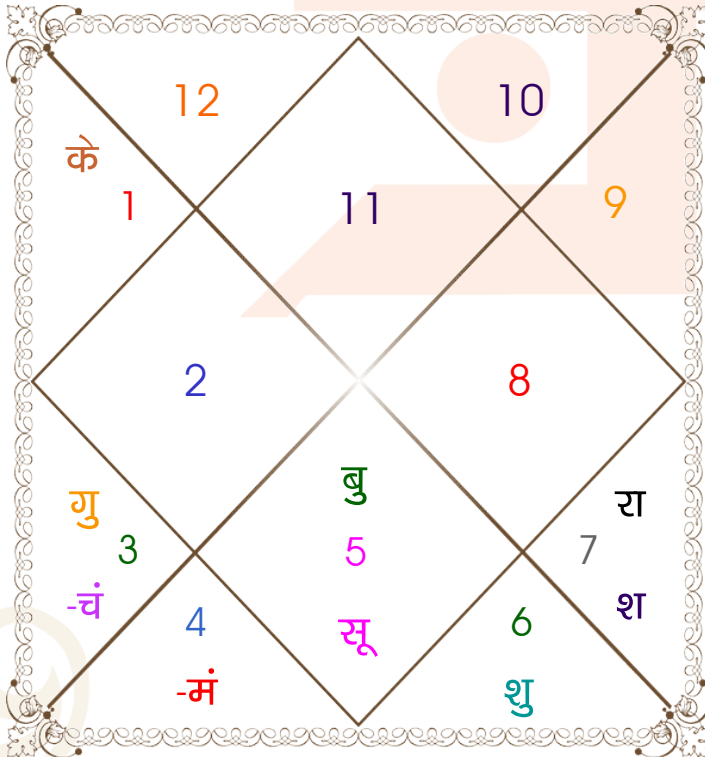
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कुंभ	22:21:58	474:27:32	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	शनि	---
सूर्य			सिंह	13:17:12	00:58:01	मघा	4	10	सूर्य	केतु	बुध	मूलत्रिकोण
चंद्र			मिथु	06:54:48	11:50:01	आर्द्रा	1	6	बुध	राहु	राहु	मित्र राशि
मंगल			कर्क	07:31:58	00:38:20	पुष्य	2	8	चंद्र	शनि	केतु	नीच राशि
बुध	अ		सिंह	18:44:11	01:52:04	पू०फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	राहु	मित्र राशि
गुरु			मिथु	19:41:50	00:10:32	आर्द्रा	4	6	बुध	राहु	मंगल	शत्रु राशि
शुक्र			कन्या	22:20:00	01:10:14	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	शुक्र	नीच राशि
शनि			तुला	12:58:58	00:04:43	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	बुध	उच्च राशि
राहु	व		तुला	15:59:03	00:04:04	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	शुक्र	मित्र राशि
केतु	व		मेष	15:59:03	00:04:04	भरणी	1	2	मंगल	शुक्र	सूर्य	मित्र राशि
हर्ष	व		मीन	17:44:42	00:01:52	रेवती	1	27	गुरु	बुध	बुध	---
नेप	व		कुंभ	09:49:05	00:01:38	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	गुरु	---
प्लूटो	व		धनु	15:02:54	00:00:37	पूर्वाषाढा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	---
दशम भाव			वृश्चि	26:32:05	--	ज्येष्ठा	--	18	मंगल	बुध	गुरु	--

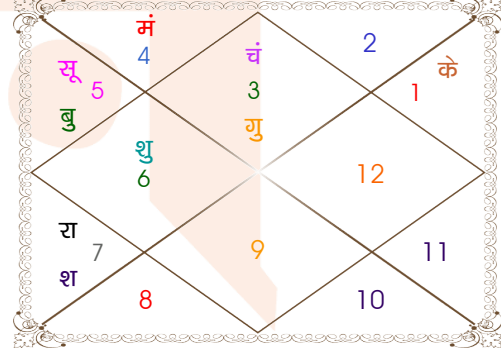
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:03:05

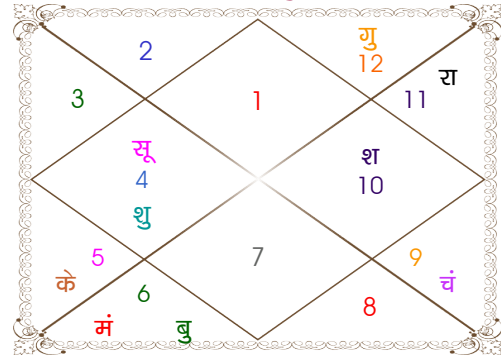
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कुम्भ 08:03:39	कुम्भ 22:21:58
2	मीन 08:03:39	मीन 23:45:20
3	मेष 09:27:02	मेष 25:08:43
4	वृष 10:50:24	वृष 26:32:05
5	मिथुन 10:50:24	मिथुन 25:08:43
6	कर्क 09:27:02	कर्क 23:45:20
7	सिंह 08:03:39	सिंह 22:21:58
8	कन्या 08:03:39	कन्या 23:45:20
9	तुला 09:27:02	तुला 25:08:43
10	वृश्चिक 10:50:24	वृश्चिक 26:32:05
11	धनु 10:50:24	धनु 25:08:43
12	मकर 09:27:02	मकर 23:45:20

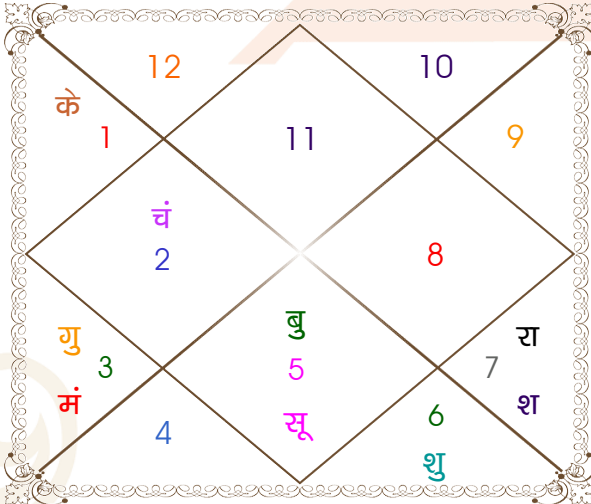
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कुम्भ 22:21:58	कुम्भ 22:21:58
2	मेष 00:08:47	मेष 00:08:47
3	वृष 00:49:27	वृष 00:49:27
4	वृष 26:32:05	वृष 26:32:05
5	मिथुन 21:04:03	मिथुन 21:04:03
6	कर्क 18:18:05	कर्क 18:18:05
7	सिंह 22:21:58	सिंह 22:21:58
8	तुला 00:08:47	तुला 00:08:47
9	वृश्चिक 00:49:27	वृश्चिक 00:49:27
10	वृश्चिक 26:32:05	वृश्चिक 26:32:05
11	धनु 21:04:03	धनु 21:04:03
12	मकर 18:18:05	मकर 18:18:05

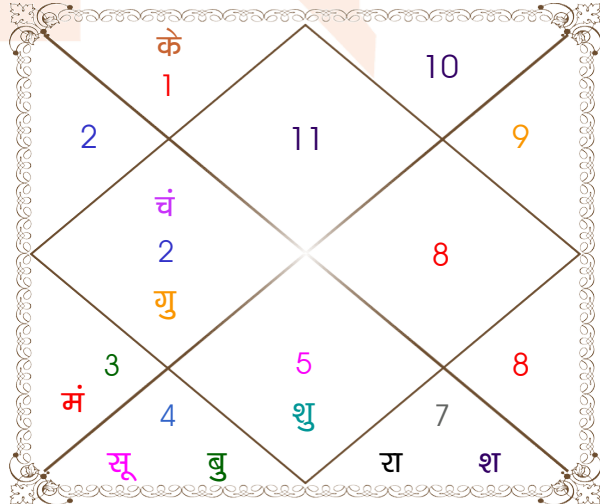
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	हस्त	चित्रा
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा
शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उत्तराभाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 17 वर्ष 8 मास 0 दिन

राहु 18 वर्ष 30/08/2013 01/05/2031	गुरु 16 वर्ष 01/05/2031 01/05/2047	शनि 19 वर्ष 01/05/2047 01/05/2066	बुध 17 वर्ष 01/05/2066 01/05/2083	केतु 7 वर्ष 01/05/2083 01/05/2090
राहु 12/01/2016	गुरु 18/06/2033	शनि 04/05/2050	बुध 27/09/2068	केतु 27/09/2083
गुरु 06/06/2018	शनि 31/12/2035	बुध 11/01/2053	केतु 24/09/2069	शुक्र 26/11/2084
शनि 12/04/2021	बुध 07/04/2038	केतु 20/02/2054	शुक्र 25/07/2072	सूर्य 03/04/2085
बुध 31/10/2023	केतु 14/03/2039	शुक्र 22/04/2057	सूर्य 31/05/2073	चंद्र 02/11/2085
केतु 17/11/2024	शुक्र 12/11/2041	सूर्य 04/04/2058	चंद्र 31/10/2074	मंगल 01/04/2086
शुक्र 18/11/2027	सूर्य 31/08/2042	चंद्र 03/11/2059	मंगल 28/10/2075	राहु 19/04/2087
सूर्य 12/10/2028	चंद्र 31/12/2043	मंगल 12/12/2060	राहु 16/05/2078	गुरु 25/03/2088
चंद्र 13/04/2030	मंगल 06/12/2044	राहु 19/10/2063	गुरु 21/08/2080	शनि 04/05/2089
मंगल 01/05/2031	राहु 01/05/2047	गुरु 01/05/2066	शनि 01/05/2083	बुध 01/05/2090
शुक्र 20 वर्ष 01/05/2090 02/05/2110	सूर्य 6 वर्ष 02/05/2110 01/05/2116	चंद्र 10 वर्ष 01/05/2116 02/05/2126	मंगल 7 वर्ष 02/05/2126 02/05/2133	राहु 18 वर्ष 02/05/2133 00/00/0000
शुक्र 30/08/2093	सूर्य 20/08/2110	चंद्र 02/03/2117	मंगल 28/09/2126	राहु 31/08/2133
सूर्य 31/08/2094	चंद्र 18/02/2111	मंगल 01/10/2117	राहु 17/10/2127	00/00/0000
चंद्र 30/04/2096	मंगल 26/06/2111	राहु 02/04/2119	गुरु 22/09/2128	00/00/0000
मंगल 01/07/2097	राहु 20/05/2112	गुरु 01/08/2120	शनि 31/10/2129	00/00/0000
राहु 01/07/2100	गुरु 08/03/2113	शनि 02/03/2122	बुध 29/10/2130	00/00/0000
गुरु 02/03/2103	शनि 18/02/2114	बुध 02/08/2123	केतु 27/03/2131	00/00/0000
शनि 02/05/2106	बुध 25/12/2114	केतु 02/03/2124	शुक्र 26/05/2132	00/00/0000
बुध 02/03/2109	केतु 02/05/2115	शुक्र 31/10/2125	सूर्य 01/10/2132	00/00/0000
केतु 02/05/2110	शुक्र 01/05/2116	सूर्य 02/05/2126	चंद्र 02/05/2133	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भोग्य के आधार पर दशा का भोग्यकाल राहु 17 वर्ष 7 मा 30 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - शुक्र	राहु - सूर्य	राहु - चंद्र	राहु - मंगल	गुरु - गुरु
17/11/2024	18/11/2027	12/10/2028	13/04/2030	01/05/2031
18/11/2027	12/10/2028	13/04/2030	01/05/2031	18/06/2033
शुक्र 19/05/2025	सूर्य 05/12/2027	चंद्र 26/11/2028	मंगल 05/05/2030	गुरु 13/08/2031
सूर्य 13/07/2025	चंद्र 01/01/2028	मंगल 28/12/2028	राहु 02/07/2030	शनि 14/12/2031
चंद्र 12/10/2025	मंगल 20/01/2028	राहु 21/03/2029	गुरु 22/08/2030	बुध 03/04/2032
मंगल 15/12/2025	राहु 09/03/2028	गुरु 02/06/2029	शनि 21/10/2030	केतु 18/05/2032
राहु 28/05/2026	गुरु 22/04/2028	शनि 27/08/2029	बुध 15/12/2030	शुक्र 25/09/2032
गुरु 21/10/2026	शनि 13/06/2028	बुध 13/11/2029	केतु 06/01/2031	सूर्य 03/11/2032
शनि 13/04/2027	बुध 30/07/2028	केतु 15/12/2029	शुक्र 11/03/2031	चंद्र 07/01/2033
बुध 15/09/2027	केतु 18/08/2028	शुक्र 16/03/2030	सूर्य 30/03/2031	मंगल 22/02/2033
केतु 18/11/2027	शुक्र 12/10/2028	सूर्य 13/04/2030	चंद्र 01/05/2031	राहु 18/06/2033
गुरु - शनि	गुरु - बुध	गुरु - केतु	गुरु - शुक्र	गुरु - सूर्य
18/06/2033	31/12/2035	07/04/2038	14/03/2039	12/11/2041
31/12/2035	07/04/2038	14/03/2039	12/11/2041	31/08/2042
शनि 12/11/2033	बुध 26/04/2036	केतु 26/04/2038	शुक्र 23/08/2039	सूर्य 26/11/2041
बुध 23/03/2034	केतु 13/06/2036	शुक्र 22/06/2038	सूर्य 11/10/2039	चंद्र 20/12/2041
केतु 16/05/2034	शुक्र 29/10/2036	सूर्य 09/07/2038	चंद्र 31/12/2039	मंगल 07/01/2042
शुक्र 17/10/2034	सूर्य 10/12/2036	चंद्र 07/08/2038	मंगल 26/02/2040	राहु 19/02/2042
सूर्य 02/12/2034	चंद्र 17/02/2037	मंगल 27/08/2038	राहु 21/07/2040	गुरु 30/03/2042
चंद्र 18/02/2035	मंगल 06/04/2037	राहु 17/10/2038	गुरु 27/11/2040	शनि 16/05/2042
मंगल 13/04/2035	राहु 08/08/2037	गुरु 01/12/2038	शनि 01/05/2041	बुध 26/06/2042
राहु 29/08/2035	गुरु 27/11/2037	शनि 24/01/2039	बुध 16/09/2041	केतु 13/07/2042
गुरु 31/12/2035	शनि 07/04/2038	बुध 14/03/2039	केतु 12/11/2041	शुक्र 31/08/2042
गुरु - चंद्र	गुरु - मंगल	गुरु - राहु	शनि - शनि	शनि - बुध
31/08/2042	31/12/2043	06/12/2044	01/05/2047	04/05/2050
31/12/2043	06/12/2044	01/05/2047	04/05/2050	11/01/2053
चंद्र 10/10/2042	मंगल 20/01/2044	राहु 16/04/2045	शनि 22/10/2047	बुध 20/09/2050
मंगल 08/11/2042	राहु 11/03/2044	गुरु 11/08/2045	बुध 26/03/2048	केतु 17/11/2050
राहु 20/01/2043	गुरु 25/04/2044	शनि 28/12/2045	केतु 29/05/2048	शुक्र 29/04/2051
गुरु 26/03/2043	शनि 18/06/2044	बुध 01/05/2046	शुक्र 28/11/2048	सूर्य 18/06/2051
शनि 11/06/2043	बुध 05/08/2044	केतु 21/06/2046	सूर्य 22/01/2049	चंद्र 08/09/2051
बुध 19/08/2043	केतु 25/08/2044	शुक्र 14/11/2046	चंद्र 24/04/2049	मंगल 04/11/2051
केतु 16/09/2043	शुक्र 21/10/2044	सूर्य 28/12/2046	मंगल 27/06/2049	राहु 30/03/2052
शुक्र 06/12/2043	सूर्य 07/11/2044	चंद्र 11/03/2047	राहु 08/12/2049	गुरु 08/08/2052
सूर्य 31/12/2043	चंद्र 06/12/2044	मंगल 01/05/2047	गुरु 04/05/2050	शनि 11/01/2053

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	3
भाग्यांक	8
मित्र अंक	3, 5, 7, 9, 8
शत्रु अंक	1, 4,
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	शुक्र, शनि, मंगल
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, मंगल
मित्र राशि	कन्या, कुम्भ
मित्र लग्न	वृष, तुला, धनु
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

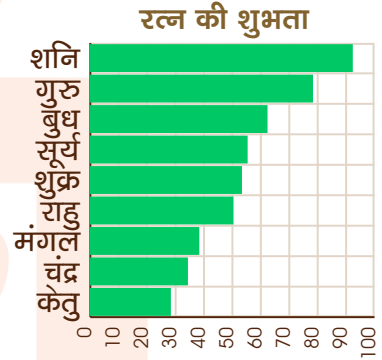
dadajijyotishkendra@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	92%	भाग्योदय, कम खर्च, स्वास्थ्य
पुखराज	गुरु	78%	सन्तति सुख, धनार्जन, धन
पन्ना	बुध	62%	दम्पति, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
माणिक्य	सूर्य	55%	दम्पति
हीरा	शुक्र	53%	दुर्घटना से बचाव, सुख, भाग्योदय
गोमेद	राहु	50%	भाग्योदय, दुर्घटना से बचाव
मूंगा	मंगल	38%	शत्रु व रोग, पराक्रम हानि, व्यावसायिक हानि
मोती	चंद्र	34%	सन्तति कष्ट, शत्रु व रोग
लहसुनिया	केतु	28%	पराक्रम हानि, शत्रु व रोग



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
राहु	01/05/2031	35%	9%	12%	62%	78%	59%	98%	62%	3%
गुरु	01/05/2047	61%	47%	50%	50%	91%	31%	92%	50%	28%
शनि	01/05/2066	35%	9%	12%	69%	78%	59%	100%	56%	3%
बुध	01/05/2083	61%	9%	38%	75%	78%	59%	92%	50%	28%
केतु	01/05/2090	35%	9%	50%	62%	78%	59%	80%	25%	52%
शुक्र	02/05/2110	35%	9%	38%	69%	78%	66%	98%	56%	41%
सूर्य	01/05/2116	67%	47%	50%	62%	84%	31%	80%	25%	3%
चंद्र	02/05/2126	61%	55%	38%	69%	78%	53%	92%	25%	3%
मंगल	02/05/2133	61%	47%	56%	50%	84%	53%	92%	25%	41%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/01/2079-12/04/2081 03/08/2081-07/01/2082	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	18/07/2088-31/10/2088 05/04/2089-19/09/2090 25/10/2090-21/05/2091	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	19/09/2090-25/10/2090 21/05/2091-02/07/2093	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	02/07/2093-18/08/2095	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/10/2097-02/05/2098 20/06/2098-26/12/2099 17/03/2100-16/09/2100	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

सम
शुभ
शुभ
सम
अशुभ

क्षेत्र

कम खर्च
सुख
सन्तति
शत्रु से कष्ट
दुर्घटना से बचाव

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति षष्ठ भाव में है। षष्ठ भाव शत्रु रोग, ऋण आदि का प्रतिनिधि भाव है अतः इस भाव में मंगल के प्रभाव से आप एक पराकमी पुरुष होंगे तथा शत्रु वर्ग को पराजित करने में समर्थ रहेंगे साथ ही शरीर में रोगाभाव रहेगा तथा सामान्यतया आप स्वस्थ ही रहेंगे। आप पराकमी एवं कठोर कार्यों को करने में रुचिशील रहेंगे। अतः आप पुलिस सेना या अन्य पराकमी विभागों में कार्यरत भी हो सकते हैं। जीवन में आपको ऋण अल्प मात्रा में ही लेना पड़ेगा तथा यदि लेना भी पड़ा तो आप इसे वापस देने में समर्थ रहेंगे जिससे मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा बनी रहेगी। साथ ही आप जीवन में इच्छित धन ऐश्वर्य एवं लाभ भी अर्जित करेंगे। आपके प्रभावी व्यक्तित्व से अन्य जन आपसे प्रभावित रहेंगे।

षष्ठ भाव से नवम भाव पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से आप धर्म या धार्मिक कार्यों पर अल्प मात्रा में ही रुचि रखेंगे साथ ही भाग्य की अपेक्षा आप कर्म पर अधिक विश्वास करेंगे। अतः आपके सांसारिक कार्यों की सिद्धि भाग्य बल की अपेक्षा परिश्रम पूर्वक कार्य करने से ही पूर्ण होगी। द्वादश भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से आपका व्यय अधिक होगा। साथ ही यदा कदा आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा परन्तु दाम्पत्य सुख का आप सामान्य रूप से उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। लग्न पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप समय समय पर गर्मी या रक्त विकार संबंधी परेशानी की अनुभूति करेंगे लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप अपने कार्यों को उत्साह पराकम एवं परिश्रम से सम्पन्न करके उनमें इच्छित सफलताएं अर्जित करेंगे।

इस प्रकार षष्ठ भावस्थ मंगल की स्थिति आपके लिए सामान्यतया अच्छी रहेगी जिसके प्रभाव से आप धनऐश्वर्य से युक्त रहेंगे तथा अपने परिवार का आधुनिक परिवेश में

लालन पालन करने में समर्थ होंगे जिससे पारिवारिक सुख शान्ति बनी रहेगी तथा पारिवारिक जनों से आप पूर्ण सहयोग सुख एवं सम्मान प्राप्त होगा। अतः आप प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे।



Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्ण्यता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4. शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में शंखचूड़ नामक कालसर्प योग विद्यमान है। परिणामस्वरूप जातक के भाग्योदय होने में अनेक प्रकार के अड़चनें आती हैं। जातक को नौकरी व्यवसाय में भी अड़चनें आती हैं और आगे बढ़ने में रुकावटें आती हैं एवं नौकरी में अवनति का भय बना रहता है। व्यापार व्यवसाय में न्यूनता, कम लाभ एवं बार-बार नुकसान होता रहता है। अथक परिश्रम करके भी व्यवसाय की स्थिति को जातक सम्भाल नहीं पाता है। इसके कारण कोई न कोई चिन्ता एवं परेशानी शरीर को लगी रहती है तथा जातक के शरीर में रोग व्याधि घेरे रहती है और चोट लगने का भय बना रहता है।

इस योग के प्रभाव से जातक के ऊपर शासन की तरफ से मुसीबतें आती रहती हैं। अधिकारियों से मनमुटाव रहता है। जातक को न्यायालय से जुर्माना, सजा या दण्ड मिल सकता है और न्यायालय पर अधिक धन खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति नाजुक होती है। जातक को पिता के सुख में न्यूनता रहती है और मामा पक्ष या बहनोई से जातक छले जाते हैं। मित्रगण समय पर धोखा दे जाते हैं। जातक का वैवाहिक जीवन कष्टमय रहता है एवं भोग से अतृप्त रहता है। घर में सुख शान्ति का अभाव रहता है।

इस योग के प्रभाव से जातक अनेक प्रकार के काम धन्धे करता है पर स्थाई सफलता सदैव संदेह के घेरे में रहती है। सुख प्राप्ति के लिए जातक को विशेष संघर्ष करना पड़ता है, परन्तु सफलता संदिग्ध रहती है। जातक को सामाजिक प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान प्रायः नहीं मिलता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. 16 सोमवार का व्रत करें।
3. राहु मन्त्र का 18000 (अठारह हजार) उनकी महादशा, अन्तर्दशा में करें या करवायें।
4. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
5. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
6. नव नाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
7. श्रावण मास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. तिरुपति बालाजी के समीप कालहस्ती शिवमन्दिर में जाकर कालसर्प योग की शान्ति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें।
9. श्रद्धापूर्वक पितरों का प्रतिवर्ष श्राद्धपक्ष में श्राद्ध करें। कम से कम सात वर्ष तक अवश्य करें।

10. सरस्वती जी की एक वर्ष तक विधिवत उपासना करें।
11. गोमेद, तिल, सरसों, कम्बल, खड़्ग, नीलवस्त्र, शूर्प आदि समय समय पर दान करें।
12. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबालकर राहु की महादशा या अन्तर दशा आदि में सवा महीने तक स्नान करें।
13. शुभ मुहूर्त में नागपाश यन्त्र को अभिमन्त्रित कर धारण करें।
14. शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत आरंभ करना चाहिए। यह व्रत 18 करें। काला वस्त्र धारण करके 18 या 3 बीज मन्त्र की माला जपें। तदन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुश लेकर पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें।
15. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वास्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
16. मंगलवार एवं शनिवार को रामचरितमानस के सुन्दरकाण्ड का 108 बार पाठ श्रद्धापूर्वक करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पंचम भाव में स्थित है तथा उस पर राहु का प्रभाव है ।
- नवम भाव में राहु एवं शनि स्थित हैं ।
- नवम भाव का स्वामी नीच का होकर अष्टम भाव में स्थित है ।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है ।

आपकी कुण्डली में चन्द्र, शुक्र, शनि और राहु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें ।

आपकी कुण्डली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गरीब या

जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में राहु पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ शनिवार गाय को सवा पांच किलो जौ सवा किलो गुड़ में मिलाकर खिलाना चाहिए। सूखे गोले में पंजीरी भरकर काले कपड़े में लपेटकर किसी सुनसान जगह पर मिट्टी में दबाएं। कबूतरों को दाना, चींटी को आटा तथा मछलियों को आटे की गोली बनाकर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांड़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

सप्तम भाव में सूर्य हो तो जातक चिन्तायुक्त राज्य से अपमानित, आत्मरत, कठोर, स्वाभिमानी एवं विवाहित जीवन दुःखी होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, कोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक कष्ट की अनुभूति नहीं होगी। उनकी आयु भी लम्बी होगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। विविध प्रकार से धनार्जन करने में वे सफल रहेंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना हार्दिक सहयोग देते रहेंगे। साथ ही आपके विवाह सम्पन्न करने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा एवं आप उनके विश्वास पात्र भी रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता है। फिर भी आप नित्य उनकी सेवा तथा वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

पंचमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, कन्यासन्ततिवान्, चंचल सट्टे से धन कमानेवाला एवं क्षमाशील होता है।

मिथुन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, अध्ययनशील, सुन्दर, रतिकुशल, भोगी, मर्मज्ञ, नेत्र चिकित्सक, अच्छा वक्ता एवं अच्छा अन्तर्ज्ञान वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपके शुभ प्रभाव से वे धन सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त करेंगी तथा इससे प्रायः युक्त ही रहेंगी। साथ ही जीवन में आपको हमेशा कला, नीति, विद्या आदि के लिए प्रोत्साहित करेंगी एवं यत्नपूर्वक इसमें अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप की संतति से भी उनका प्रेम रहेगा एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रिय रहेंगे तथा उनकी आज्ञापालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके आपसी संबंध भी मधुरता से युक्त रहेंगे एवं आपसी भेदभाव भी अल्प मात्रा में होंगे। जीवन में आप यत्नपूर्वक उनकी सेवा तथा अन्य वांछित सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के लिए भी सर्वदा दृढ़ रहेंगे इस प्रकार आप आपस में प्रसन्नतापूर्वक रहेंगे।

मंगल

छठेभाव में मंगल हो तो जातक बलवान्, धैर्यशाली, प्रबल जठराग्नि, कुलवन्त, प्रचण्ड शक्ति, शत्रुहन्ता, ऋणी, दादरोगी, कोधी, पुलिस अफसर, व्रण और रक्तविकार युक्त एवं अधिकव्यय करने वाला होता है।

कर्क राशि में मंगल हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, धनवान्, बदमाश, कुशलचिकित्सक, या सर्जन, चंचलमनवाला सुखाभिलाषी, कृषक, रोगी एवं दुष्ट होता है।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में है अतः भाईयों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा। जीवन में वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों तथा क्षेत्र में आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से आपको किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे। साथ ही शत्रुवर्ग से भी वे आपकी नित्य रक्षा करने में तत्पर रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा एवं हमेशा उनको अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपकी आपसी संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सामान्य रूप से मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में क्षणिक तनाव की स्थिति रहेगी परन्तु कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उनकी वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से भी सहयोग देंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी भलाई करने में तत्पर रहेंगे।

बुध

सातवेंभाव में बुध हो तो जातक सुन्दर, विद्वान्, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, अल्पवीर्य, दीर्घायु एवं धार्मिक होता है।

सिंह राशि में बुध हो तो जातक मिथ्याभाषी, कुकर्मि, ठग, कामुक, भ्रमणशील, अभिमानी, वक्ता, कम उम्र में विवाह, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं सरकारी नौकर होता है।

गुरु

पंचमभाव में गुरु हो तो जातक नीतिविशारद, सन्ततिवान्, सट्टे से धन प्राप्त करने वाला, कुलश्रेष्ठ, लोकप्रिय, कुटुम्ब में सबसे ऊँचा स्थान, ज्योतिषी एवं आस्तिक होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान्, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

अष्टम भाव में शुक्र हो तो जातक ज्योतिषी, कोधी, मनस्वी, दुखी, गुप्तरोगी, पर्यटनशील, परस्त्रीरत, विदेशवासी, निर्दयी, गुप्तविद्याओं के प्रतिरुचि एवं रोगी होता है।

कन्या राशि में शुक्र हो तो जातक, सुखी, भोगी, अतिकामी, सभापण्डित, रोगी, वीर्यहीन, सट्टे द्वारा धननाशक एवं अवैध सम्बन्ध रखने वाला होता है।

शनि

नवम भाव में शनि हो तो जातक धर्मात्मा, साहसी, प्रवासी, कृशदेही, भीरु, भ्रातृहीन, शत्रुनाशक रोगी वातरोगी, भ्रमणशील एवं वाचाल होता है।

तुला राशि में शनि हो तो जातक राजनीति में रुचि रखने वाला, प्रसिद्धनेता, धनी, सम्मानित शक्तिशाली, दानशील, परस्त्रियों में रुचि, सुभाषी, यशस्वी, स्वाभिमानी एवं उन्नतिशील होता है।

राहु

नवम भाव में राहु हो तो जातक प्रवासी, वातरोगी, व्यर्थ परिश्रमी, दुष्टबुद्धि, भाग्योदय से रहित, तीर्थाटनशील एवं धर्मात्मा होता है।

तुला राशि में राहु हो तो जातक अल्पायु, दाँतों के रोग, विरासत में धन पाने वाला एवं कार्य कुशल होता है।

केतु

तृतीय भाव में केतु हो तो जातक चंचल, वायुजनित रोगों से पीड़ित, भाई बहन विहीन, धनी, व्यर्थवादी एवं भूतप्रेतभक्त होता है।

मेष राशि में केतु हो तो जातक चंचल, बहुभाषी एवं सुखी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(30/08/2013 - 01/05/2031)

राहु की महादशा 30/08/2013 को आरम्भ और 01/05/2031 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु नवम भाव में स्थित है। राहु की तृतीय भाव पर दृष्टि है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगलदशा चल रही थी। मंगल के कारण आपकी यात्रा, व्यय, कुछ आर्थिक लाभ, उत्तम शिक्षा और सम्पत्ति की प्राप्ति हुई होगी। राहु की इस दशा में आपको सम्पत्ति तथा समृद्धि मिलेगी, दूर की यात्रा तथा आध्यात्मिकता की ओर झुकाव होगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। आप में शक्ति तथा ऊर्जा होगी। आपको अधिक कार्य और श्रम नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे आपका शरीर कमजोर हो सकता है। मौसम में परिवर्तन के कारण आपको ज्वर, संक्रामक रोग, विषाणुजन्य समस्या, चर्मरोग, स्नायविक दुर्बलता और अंगों में कमजोरी आदि बीमारियाँ हो सकती हैं। थोड़ी सी सावधानी से इन बीमारियों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आप सक्रिय तथा आर्थिक अवसर की तलाश में रहेंगे। आपकी भौतिक समृद्धि अच्छी होगी और सारा सुख मिलेगा। आपको शक्ति और अधिकार मिलेगा। आपको सट्टे से सुन्दर लाभ मिलेगा। तृतीय भाव पर राहु की दृष्टि के फलस्वरूप आपको छोटी भाई-बहनों से लाभ मिलेगा, यात्रा और गमनागमन होगा। जीविका और व्यवसाय के लिए तकनीकी तथा विज्ञान के क्षेत्र, कम्प्यूटर-विज्ञान, राजनीति, कूटनीतिक सेवा, अनुसन्धान, सरकारी सेवा आदि का चयन कर सकते हैं। चमड़े के सामान, दवा, रसायन, बिजली के उपकरण, रत्न, सोना आदि का व्यापार, लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों की आय में वृद्धि तथा उन्नति होगी। आपकी अचानक पदोन्नति होगी और वरिष्ठ कर्मचारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों का व्यय, यात्रा और परिवर्तन हो सकता है। ये सब आखिरकार लाभदायक सिद्ध होंगे। दशा में प्रगति के साथ स्थित में सुधार आएगा।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

इस दशा में आपको जीवन का सभी सुख मिलेगा। आपको भौतिक समृद्धि और सुख मिलेगा तथा जीवन सुखमय होगा। आपको वाहन का सुख मिलेगा। आपको सम्पत्ति की प्राप्ति भी होगी। शनि की अन्तर्दशा में छोटी लाभदायक यात्रा और मंगल की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा अति उत्तम होगी। आप उच्च शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं और अपनी

पसन्द की संस्था में पढ़ाई कर सकते हैं। कम्प्यूटर विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक इन्जीनियरिंग, भौतिक विज्ञान, सिविल इन्जीनियरिंग, विधि, दवा आदि के क्षेत्र में आपकी रुचि हो सकती है। आप में नेतृत्व गुण, साहस और दृढ़ता है। अपने आपके रास्ते में आनेवाली सभी बाधाओं पर विजय पाने की क्षमता है।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चे समृद्ध होंगे और आप उनसे गौरवान्वित होंगे। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, उन्हें सम्बंधियों तथा परिवार से लाभ मिलेगा। आपके जीवनसाथी के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता को प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय मिलेगी, उन्हें मामूली स्वास्थ्य समस्या और कर्मचारियों से लाभ मिलेगा। आपके पिता को धन, यश तथा ख्याति की प्राप्ति होगी और उनकी यात्रा होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को साझेदार से लाभ, यात्रा और व्यापार में सफलता मिलेगी जबकि बड़े भाई-बहनों को आर्थिक-समृद्धि मिलेगी, उनके अच्छे मित्र होंगे और उनकी इच्छाओं की पूर्ति होगी। आपका उनके साथ सम्बन्ध मधुर रहेगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के कारण आपको सुख, सम्पत्ति, यात्रा तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। गुरु की अन्तर्दशा में यश, ख्याति, कार्यों में सफलता और जीवन का सुख मिलेगा। शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप छोटी यात्रा तथा कुछ मामूली बाधा हो सकती है। बुध की अन्तर्दशा में आपका विवाह होगा, साझेदारी से लाभ और जीविकोपार्जन में सफलता मिलेगी जबकि केतु की अन्तर्दशा के कारण कुछ समस्याएं हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप हर प्रकार का लाभ और कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति, दूर की यात्रा और आध्यात्मिक कार्यों में रुचि हो सकती है। चंद्र की अन्तर्दशा में परिवर्तन और अचानक लाभ या हानि हो सकती है। मंगल की अन्तर्दशा में सन्तान से सुख मिलेगा।

अंतर्दशा :- राहु - शुक्र
(17/11/2024 - 18/11/2027)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 30/08/2013 को प्रारंभ होकर 01/05/2031 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष होगी जो आपके लिए 17/11/2024 को प्रारंभ होकर 18/11/2027 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। शुक्र शुभ ग्रह है। अष्टम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के द्वितीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे; सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। भावनात्मक रूप से विचलित रह सकते हैं। छोटी-छोटी बातों पर दुखी हो सकते हैं। इस संबंध में सकारात्मक प्रयास करना श्रेयस्कर रहेगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र वैदिक मंत्र के 16000 जाप करें।

अंतर्दशा :- राहु - सूर्य
(18/11/2027 - 12/10/2028)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 30/08/2013 को प्रारंभ होकर 01/05/2031 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 10 मास 24 दिन की होगी जो आपके लिए 18/11/2027 को प्रारंभ होकर 12/10/2028 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। सप्तम भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के लग्न पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप सरकारी अधिकारियों के कोप के कारण अपमानित हो सकते हैं। यात्राओं के शौकीन होंगे। चरित्र में गिरावट आ सकती है। विपरीत लिंग के व्यक्तियों से संपर्क के कारण बदनामी हो सकती है। प्रत्येक के साथ आप न्याय और बराबरी का व्यवहार करना पसंद करेंगे। इस कारण मित्रों की संख्या में कमी आ सकती है। दुर्घटना या चोट से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए 5 7 रत्ती का माणिक सोने या चांदी की अंगूठी में रविवार के दिन प्रातःकाल, सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य की उपासना के बाद दायें हाथ की अनामिका में धारण करें।

**अंतर्दशा :- राहु - चन्द्र
(12/10/2028 - 13/04/2030)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 30/08/2013 को प्रारंभ होकर 01/05/2031 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्रमा की अंतर्दशा 1 वर्ष 6 मास की होगी जो आपके लिए 12/10/2028 को प्रारंभ होकर 13/04/2030 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। चंद्रमा मन का कारक है। पंचम भाव में स्थित होकर चंद्रमा आपकी कुंडली के एकादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी धर्म और अध्यात्म में रुचि होगी। स्पर्धाओं में भाग ले सकते हैं। सट्टेबाजी में धनहानि हो सकती है। मनोरंजन के स्थलों पर जा सकते हैं। संतान से जुड़े रहेंगे; लोकप्रिय और प्रसिद्ध होंगे।

शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्रमा के गायत्री मंत्र के जाप करें।

